eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI VISHWAVIDYALAYA PUBLICATION

RESEARCH ARTICLE

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा विवेचित अश्वमेध यज्ञ : जनसंचार का एक अनोखा प्रयोग

नेहा सिंह [1*], ज्वलंत भावसार [2]

[1] सहायक प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत
[2] सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत

सारांश: यज्ञ भारतीय संस्कृति का आदि प्रतीक है। सनातन धर्म में यज्ञ को विशेष महत्व दिया गया है, और बिना यज्ञ कोई भी शुभ–अशुभ धर्मकार्य पूर्ण नहीं माना जाता। ऋग्वेद का प्रथम मंत्र अग्नि की प्रार्थना से शुरू होता है, जिसमें अग्नि को पुरोहित कहा गया है। वैदिक युग में गायत्री उपासना और यज्ञ को पूरक माना गया, जहाँ गायत्री को माता और यज्ञ को पिता की संज्ञा दी गई है। आर्ष ग्रंथों में अश्वमेध यज्ञ को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। हालांकि, इसे पशु–बलि से जोड़ा गया है, पर इसके प्रमाण दुर्लभ हैं। ऋग्वेद, शतपथ ब्राह्मण, महाभारत, और रामायण में इसके संदर्भ मिलते हैं।

पंडित श्रीराम शर्मा 'आचार्य' ने अश्वमेध यज्ञ को आध्यात्मिक प्रयोग कहा, जो पारिस्थितिक संतुलन और वातावरण शुद्धि से जुड़ा है। इस शोध का उद्देश्य उनके आयोजनों को जनसंचार माध्यम के रूप में प्रस्तुत करना है। इन आयोजनों में विचार मंच, यज्ञ शालाएं, साहित्य केंद्र और प्रदर्शनियों के माध्यम से सामयिक विचारों और सिद्धांतों का प्रसार किया जाता है। यज्ञ सामूहिकता, सत्कर्म, और त्याग की भावना जागृत कर समाज और राष्ट्र में सकारात्मक बदलाव लाने की प्रेरणा देता है। आचार्य जी द्वारा विवेचित अश्वमेध यज्ञ जनसंचार का एक अनोखा माध्यम है।

कूट शब्द: जन संचार, अश्वमेध यज्ञ, अध्यात्मिक संचार, वैदिक दृष्टिकोण

*CORRESPONDENCE
Address Department of Journalism & mass communication, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Gayatrikunj-Shantikunj, Haridwar, Uttarakhand.

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2024 Neha Singh & Jwalant Bhavsar
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

प्रस्तावना

संचार एक गतिशील प्रक्रिया है। संचार एक लैटिन शब्द है जिसका अर्थ है– share करना अर्थात साझा करना। जब दो या दो से अधिक व्यक्ति आपस में कुछ चिह्नों, सकेंतो, के माध्यम से अपने विचारों या भावनाओं का आदान – प्रदान करते हैं तो उसे संचार कहते हैं। साधारण शब्दों में कहें तो, संचार का अर्थ सूचनाओं का आदान प्रदान से है। संचार माध्यम का महत्व किसी भी सूचना, विचार या भाव को दूसरों तक पहुँचाना ही मोटे तौर पर संचार या कम्युनिकेशन कहलाता है। एक साथ लाखों–करोड़ों लोगों तक एक सूचना को पहुँचाना ही संचार या जनसंचार या मास कम्युनिकेशन मीडिया कहलाता है। [1] मानव सभ्यता के विकास में संचार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी विधा में जन संचार (Mass Communication) का उद्देश्य विचारों और जानकारी को जन समूह में विस्तृत रूप से फैलाना है। वह व्यक्तिगत, लोगों और समूह के साथ किया जाता है। संचार–अपनी बात दूसरों को समझाने के लिए कहीं तरह के प्रतीक, चिह्न, शब्द और इशारों का भी उपयोग होता है। यह verbal (मौखिक) और non verbal (अशाब्दिक या गैर मौखिक) तरीके से भी किया जाता है। इनमें कहीं सारे तरीके होते है जैसे: आमने सामने बात करना, लिखित संदेश, फोन कॉल, वीडियो, ईमेल, टेक्स्ट संदेश, आदि।

संचार माध्यम के प्रकार

संचार माध्यमों को तीन भागों में बांटा जा सकता है–

1. मुद्रित माध्यम
2. श्रव्य माध्यम
3. दृश्य श्रव्य माध्यम

भारतीय दर्शन सदैव संचार की विधा को समाहित करता रहा है। सनातन परंपरा के अनुसार शास्त्रों का स्वरूप पहले श्रुतियों के रूप में हुआ करता था। इन श्रुतियों का संचार गुरुकुलों में गुरु द्वारा अपने शिष्यों को श्रवण और स्मरण के माध्यम से किया जाता था। इन्ही गुरुकुलों में विभिन्न कर्मकांडों और कार्यक्रमों में निश्चित स्थान यज्ञ का रहा है जो प्रत्येक गुरु एवं शिष्य के दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग हुआ करता था। इन्ही यज्ञों को आश्रम के बाहर राजाओं और गृहस्थों के घरों में सम्पन्न कराया जाता था जो संचार की परंपरा का एक उदाहरण थी।

यज्ञ: संचार का एक साधन

यज्ञ भारतीय संस्कृति का आदि प्रतीक है। हमारे धर्म में जितनी महानता यज्ञ को दी गई है, उतनी और किसी को नहीं दी गयी है। जीवन का कोई भी कर्म हो, शायद ही यज्ञ के बिना पूर्ण माना जाता हो। जन्म से पूर्व से लेकर मरण पर्यन्त सम्पन्न होने वाले संस्कार यज्ञ के माध्यम से ही सम्पन्न होते हैं। यज्ञ के चिकित्सकीय गुण एवं वातावरण शुद्धि के लाभ सर्वविदित हैं। यज्ञ से कामना सिद्धि के अनगिनत उदाहरण शास्त्रों में भरे पड़े हैं। इन सबके साथ यज्ञ में जो प्रेरणा प्रवाह निहित है, साधना का समग्र विधान विद्यमान है, वह स्वयं में विलक्षण है। यज्ञ में निहित जीवन दर्शन व्यक्ति, परिवार, समाज– संस्कृति, प्रकृति–पर्यावरण, सकल सृष्टि एवं ब्रह्माण्ड को स्वयं में समेटे हुए है। इसमें भौतिक विकास–आध्यात्मिक उन्नयन, इहलोक–परलोक, विज्ञान–अध्यात्म जीवन के दोनों विरोधी ध्रुव अपनी समग्रता में गुंथे हुए मिलते हैं, जो यज्ञ के दर्शन की विशिष्टता है। साथ ही इसमें जीवन साधना का वह पथ निर्दिष्ट है, जो व्यक्ति को जहाँ खड़ा है, वहीं से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है और व्यक्तित्व के मर्म को स्पर्श करते हुए, उसके रुपाँतरण के साथ चरम लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है और व्यक्ति के उत्कर्ष के साथ समष्टि के कल्याण को सुनिश्चित करता है। वर्तमान शोध पत्र में यज्ञ से जुड़े इन्हीं पक्षों को प्रकाशित करने का प्रयास है, जिसमें इसके समग्र जीवन दर्शन एवं साधना पथ को स्पष्ट किया जा रहा है।

यज्ञ, यज धातु से बना है, जिसके तीन अर्थ हैं, जो इसके व्यवहारिक एवं समग्र स्वरुप पर प्रकाश डालते हैं। 1.देवपूजन, 2.संगतिकरण और 3.दान। इन तीनों प्रवृतियों में व्यक्ति एवं समाज के उत्कर्ष संभावनाएं विद्यमान हैं। देवपूजन का अर्थ है – परिष्कृत व्यक्तित्व दैवी सद्गुणों का अनुगमन। संगतिकरण, अर्थात् एकता, सहकारिता, संघबद्धता। दान अर्थात् समाज परायणता, विश्व कौटुम्बिकता एवं उदार सहृदयता। इन तीनों प्रवृतियों का प्रतिनिधित्व यज्ञ करता है। और सरल भाषा में यज्ञ का अर्थ दान, एकता, उपासना से हैं। [2] यज्ञ का वेदोक्त आयोजन शक्तिशाली मन्त्रों का विधिवत उच्चारण, विधिपूर्वक बनाए हुए कुण्ड, शास्त्रोक्त समिधाएं तथा सामग्रियाँ जब ठीक विधानपूर्वक हवन की जाती हैं, उनका दिव्य प्रभाव विस्तृत आकाश मण्डल में फैल जाता है। उसके प्रभाव के फलस्वरुप प्रजा के अन्तःकरण में प्रेम, एकता, सहयोग, सद्भाव, उदारता, ईमानदारी, संयम, सदाचार, आस्तिकता आदि सद्भावों की स्वयंमेव आविर्भाव होने लगता है। [3]

अश्वमेध यज्ञ

श्री वै राष्ट्रं।
राष्ट्रं वै अश्वमेधः तस्मात् राष्ट्री अश्वमेधेन् यजेत्।
सर्षाः वै देवताः। अश्वमेधे अवयताः।
तस्मात् अश्वमेधे थाजी सर्व दिशों अभिजयन्ति।
– शतपथ ब्राह्मण [4]

वर्चस्व ही राष्ट्र है। राष्ट्र ही अश्वमेध है। राष्ट्र और उसकी शक्तियों का भली भाँति संगठन करना ही अश्वमेध यज्ञ है। राष्ट्र परायण अश्वमेध का संयोजक सर्व विजयी होता है।

doi.org/10.36018/ijyr.v7i2.127

"अश्वमेधोमहायज्ञः प्रायश्चित्तमुदाहृतम्"
– राजधर्मानुशासनपर्व, महाभारत [5]

महाभारत जैसे महाकाव्य में अश्वमेध को महायज्ञ का स्थान दिया गया है। राजधर्मानुशासन पर्व के प्रारम्भ में जब युधिष्ठिर बन्धुवध के कारण बहुत दुःखी हो रहे थे। और समझ रहे थे उन्होंने ऐसा कर बहुत बड़ा पाप किया है उस समय महर्षि व्यास उन्हें उस पाप पंक से निकलने का एक मार्ग सुझाते हैं जो है अश्वमेध यज्ञ। महाभारत में जिन यज्ञों का उल्लेख है उनके नाम ये हैं– अश्वमेध, राजसूय, पुण्डरीक गवामयन, अतिरात्र, वाजपेय, अग्निजित् एवं बृहस्पति। इन सब यज्ञों में अश्वमेध एवं राजसूय का ही बृहद वर्णन मिलता है शेष का केवल नाम भर ही आया है। महाभारत के दो राजसूय प्रसिद्ध हैं। एक तो महाराज युधिष्ठिर ने किया और दूसरा श्रीकृष्ण ने। अश्वमेध तो अनेक किये गये जिनका विस्तारपूर्वक उल्लेख महाभारत के पर्वों में बिखरा पड़ा है। अकेले शान्तिपर्व में ही कितने ही धर्मात्मा राजाओं के अनेक अश्वमेध यज्ञों का उल्लेख है। दृष्टान्त के रूप में अविक्षित् के पुत्र का अश्वमेध, दुष्यन्त के पुत्र भरत के एक सहस्र अश्वमेध, दशरथ के पुत्र राम के दस अश्वमेध, भागीरथ के अनेक अश्वमेध, दिलीप के एक सौ अश्वमेध इत्यादि। इन राजाओं और इनके अश्वमेध यज्ञों की संख्या का उल्लेख तो प्रासंगिक रूप में मिलता है। जिस अश्वमेध यज्ञ का प्रमुख रूप से उल्लेख है वह है महाराज युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ। महाभारत युद्ध की समाप्ति पर दुःखित हुए युधिष्ठिर की मनःशान्ति के लिये पाप के प्रायश्चित के रूप में अश्वमेध यज्ञ करने का सुझाव महर्षि व्यास ने दिया था। यह सुझाव युधिष्ठिर को पसन्द आया। और उसने अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय कर लिया। इसी अश्वमेध यज्ञ का वर्णन हमें आश्वमेधिक पर्व में मिलता है। वहाँ कहा है कि अश्वमेध यज्ञ में वेद विद्या में पारंगत याजकों ने सब कुछ शास्त्रोक्त विधि के अनुसार किया। उपरोक्त उदाहरणों से यह बात स्पष्ट है की अश्वमेध यज्ञ के परिपेक्ष में कहीं पर भी पशु बलि का उल्लेख नहीं है। प्रथम बार अश्वमेध शब्द का सम्बद्ध अश्व (घोड़े) से महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में मिलता है। यदि उस पद्धति की गहराइयों में उतरेंगे तो निश्चित ही अश्वमेध एक संचार प्रक्रिया थी जिसके माध्यम से यह सूचित किया जाता था की एक अखण्ड राष्ट्र के निर्माण हेतु राज्य राम चले आ रहे है। [6]

पंडित श्रीराम शर्मा 'आचार्य' द्वारा अपने जीवनकाल में विभिन्न आध्यात्मिक एवं सामाजिक प्रयोग किए । इन सभी प्रयोगों में 'विचार क्रांति' का बीज सदैव निहित रहा। विचारों के परिवर्तन हेतु उनकी समस्त योजनाओं में सदैव जन संचार की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अश्वमेध यज्ञ उनके अनुसार एक अनुष्ठान है जो राष्ट्र की सामूहिक चेतना को जगाने के लिए एवं सुसुप्त प्रतिभा को समाज कल्याण एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए किया जाता है। यह आध्यात्मिक अभ्यास अपने प्रतिभागियों के भीतर अथक तपस्या की भावना को आत्मसात करने के लिए और श्रेष्टता के लिए अधिक से अधिक त्याग करने को प्रेरित करती है। आचार्य जी द्वारा संपादित अखण्ड ज्योति पत्रिका के जनवरी, 1966 में प्रकाशित अंक में उन्होंने सम्राट समुद्रगुप्त का विवरण देते हुए लिखा है – "भारतीय सम्राटों में से जिन महान् वैदिक परम्पराओं का लोप हो गया था, समुद्रगुप्त ने उनकी पुनर्स्थापना की। उनमें से एक अश्वमेध यज्ञ भी था। सम्राट समुद्रगुप्त ने जिस अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया था, उसमें उसका दृष्टिकोण मात्र भी यश, विजय तथा स्वर्ग न था। समुद्रगुप्त का उद्देश्य उसके राज्य के अतिरिक्त भारत में फैले हुए अनेक छोटे–मोटे राज्यों को एक सूत्र में बाँधकर एक छत्र कर देना था, जिससे भारत एक अजेय शक्ति बन जाये और आये–दिन खड़े आक्राँताओं का भय सदा के लिए दूर हो जाये।" [7] इसी प्रकार अप्रैल, 1976 के अंक में 'तप द्वारा प्राणशक्ति के अभिवर्धन' विषय में अपने लेख में उन्होंने अश्वमेध शब्द को परिभाषित करते हुए उसे 'इंद्रिय परिष्कार' की उपमा दी है। [8]

अश्वमेध यज्ञ वृद्धि की इच्छा शक्ति के साथ प्रतिभागियों को आशीर्वाद देता है उनके दोष से छुटकारा पाने के लिए और उनके अच्छे गुण और गुणों में वृद्धि से बेहतर नागरिक बनने के लिए। अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया और व्यापक भारतीय संस्कृति की एक शानदार प्रदर्शन, जो ज्ञान की आज की समस्याओं को हल किया जा सकता है के माध्यम से। जहाँ भी इन अश्वमेध यज्ञ प्रदर्शन किया गया है, उन क्षेत्रों में अपराधों और आक्रामकता की दर में कमी का अनुभव किया है। अश्वमेध यज्ञ द्वारा उज्ज्वल भविष्य की दिशा में प्रगति की जा सकती हैं। विशाल आयोजनों में विश्व के विविध स्थानों से पधारे हुए याजकों एवं स्वयंसेवकों को आध्यात्मिक जीवन चर्या, व्यक्तित्व विकास, पारिवारिक संस्कार, समाज एवं राष्ट्र निर्माण एवं वातावरण का सूक्ष्म परिष्कार के विशिष्ट सिद्धांतों से अवगत कराया जाता है। इस हेतु पूरे आयोजन में विभिन्न विधाओं और कार्यक्रमों को सम्पन्न किया जाता है जिसमे विचार मंच, यज्ञ शालाएं, साहित्य केंद्र एवं प्रदशनी जैसी इकाइयों के माध्यम से जनसंचार होता है।

इस प्रकार से अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा समय–समय पर देश–विदेशओं में बड़े स्तर पर अश्वमेध यज्ञ कराए गए है जिसमें लाखों की संख्या में जनसमूह ने प्रतिभाग किया। इन आयोजनों के माध्यम से अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा जनसंचार का प्रयोग करके उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति की। अब तक हुए अश्वमेध यज्ञों की सूची निम्न प्रकार है।

1. जयपुर राजस्थान 07–11–1992 10–11–1992
2. भिलाई छत्तीसगढ़ 18–02–1993 21–02–1993
3. गुना मध्य प्रदेश 03–04–1993 06–04–1993
4. भुवनेश्वर उड़ीसा 03–05–1993 06–05–1993

5. लीसेस्टर यूके, इंग्लैंड 08–07–1993 11–07–1993
6. टोरंटो कनाडा 23–07–1993 25–07–1993
7. लॉस एंजिल्स यूएसए 19–08–1993 22–08–1993
8. लखनऊ उत्तर प्रदेश 27–10–1993 30–10–1993
9. बड़ौदा गुजरात 26–11–1993 29–11–1993
10. भोपाल मध्य प्रदेश 11–12–1993 14–12–1993
11. नागपुर महाराष्ट्र 06–01–1994 09–01–1994
12. ब्रह्मपुर उड़ीसा 26–01–1994 29–01–1994
13. कोरबा छत्तीसगढ़ 06–02–1994 10–02–1994
14. पटना बिहार 23–02–1994 26–02–1994
15. कुरूक्षेत्र हरियाणा 31–03–1994 03–04–1994
16. चित्रकूट मध्य प्रदेश 16–04–1994 20–04–1994
17. भिंड मध्य प्रदेश 02–05–1994 05–05–1994
18. शिमला हिमाचल प्रदेश 22–06–1994 25–06–1994
19. बुलन्दशहर उत्तर प्रदेश 17–11–1994 20–11–1994
20. हल्दीघाटी राजस्थान 29–11–1994 02–12–1994
21. राजकोट गुजरात 13–12–1994 17–12–1994
22. जबलपुर मध्य प्रदेश 28–01–1995 31–01–1995
23. कोटा राजस्थान 12–02–1995 15–02–1995
24. इंदौर मध्य प्रदेश 05–04–1995 09–04–1995
25. शिकागो यूएसए 28–07–1995 30–07–1995
26. आंवलखेड़ा, आगरा उत्तर प्रदेश 03–11–1995 07–11–1995
27. मॉन्ट्रियल कनाडा 26–07–1996 28–07–1996
28. गोरखपुर उत्तर प्रदेश 25–02–1998 28–02–1998
29. न्यू जर्सी यूएसए 24–07–1998 26–07–1998
30. हरिद्वार उत्तराखंड 06–11–2000 11–11–2000
31. तिरूपति आंध्र प्रदेश 23–12–2001 27–12–2001
32. सिडनी ऑस्ट्रेलिया 01–10–2005 03–10–2005
33. मदुरै तमिलनाडु 29–12–2005 01–01–2006
34. जॉन्सबर्ग दक्षिण अफ़्रीका 03–05–2006 05–05–2006
35. लुधियाना पंजाब 05–10–2010 08–10–2010
36. काशीपुर उत्तराखंड 13–11–2008 16–11–2008
37. ऑकलैंड नॉर्थ आइलैंड, एनजेड 27–02–2009 01–03–2009
38. हरिद्वार उत्तराखंड 7–11–2011 20–01–2014
39. बेंगलुरु कर्नाटक 17–01–2014 20–01–2014
40. ब्रिस्बेन, क्यूएलडी ऑस्ट्रेलिया 18–04–2014 20–04–2014 [9, 10]

यज्ञ के माध्यम से आध्यात्मिक जीवनचर्या का संचार

कलयुग की एक सबसे बड़ी समस्या है आध्यात्मिक जीवन शैली का नष्ट होना। आचार्यजी द्वारा अध्यात्म की एक बड़ी ही सरल परिभाषा दी गई जो है "आत्म परिष्कार की साधना का नाम ही अध्यात्म है।" यज्ञ के माध्यम से व्यक्ति के दैनिक जीवन में नियमितता, शुचिता और स्वास्थ्य परायणता का जागरण होता है। प्रतिदिन यज्ञ में भाग लेने से व्यक्ति में मानसिक, शारीरिक एवं सामाजिक श्रेष्ठता के भाव जागृत होते है। इन्ही यज्ञों का आयोजन आचार्य जी के मार्गदर्शन में सामाजिक स्तर पर भी होता रहा है जिसके माध्यम से आध्यात्मिक जीवन शैली को जन समूह में प्रतिस्थापित किया जाता है। [11]

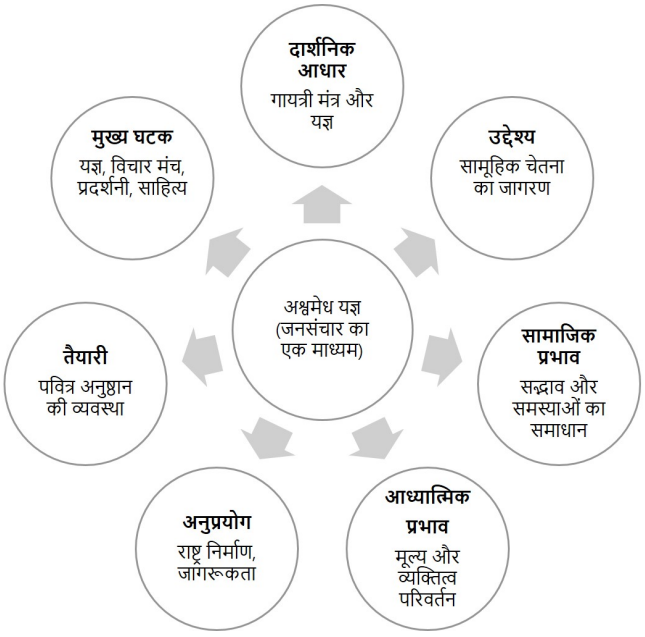

चित्र 1 : अश्वमेध यज्ञ – जनसंचार का एक माध्यम

व्यक्तित्व निर्माण

आचार्यश्री के शब्दों में, यज्ञादि कर्मकाण्ड द्वारा देव आवाहन, मंत्र प्रयोग, संकल्प एवं सद्भावनाओं की सामूहिक शक्ति से एक ऐसी भट्टी जैसी ऊर्जा पैदा की जाती है, जिसमें मनुष्य की अंत:वृत्तियों को गलाकर इच्छित स्वरुप में ढालने की स्थिति में लाया जा सकता है। गलाई के साथ ढलाई के लिए उपयुक्त प्रेरणाओं का संचार भी किया जा सके, तो भाग लेने वालों में वांछित, हितकारी परिवर्तन बड़ी मात्रा में लाये जा सकते हैं। यज्ञ में निहित गूढ़ मनोवैज्ञानिक सत्य को उद्घाटित करते हुए आचार्यश्री लिखते हैं, इन्द्रियाँ अपने–अपने विषयों की ओर आकर्षित होती हैं, मन सुख की कल्पना में डूबना चाहता है, बुद्धि विचारों से प्रभावित होती है, परन्तु चित्त और अन्त:करण में जहाँ स्वभाव और आकांक्षाएं उगती रहती हैं, उसे प्रभावित करने में ऊपर के सारे उपचार अपर्याप्त सिद्ध होते हैं। अश्वमेध यज्ञ में संस्कारादि ऐसे सूक्ष्म–विज्ञान के प्रयोग हैं, जिनके द्वारा मनुष्य के व्यक्तित्व का कायाकल्प कर सकने वाली उस गह–राई को भी प्रभावित, परिवर्तित किया जा सकता है। आचार्यश्री के शब्दों में, यज्ञ की पहुँच अन्त:करण, अन्तर्मन तक, सु–परमन तक है। वह व्यक्ति की विचारणा, आकांक्षा, भावना, श्रद्धा, निष्ठा, प्रज्ञा को प्रभावित करता है, उनका परिशोधन और अभिवर्धन भी। इस तरह अश्वमेध यज्ञ व्यक्तित्व के रुपाँ–तरण का एक गहरा मनो–आध्यात्मिक प्रयोग है, जिससे मनुष्य के प्रसुप्त देवत्व के जागरण का प्रयोजन सिद्ध होता है। [12]

परिवार में संस्कारों का बीजारोपण

आचार्यश्री के शब्दों में, पूर्वकाल में पुत्र प्राप्ति के लिए ही पुत्रेष्टि यज्ञ कराते हों सो बात नहीं, जिनको बराबर सन्तानें प्राप्त होतीं थीं, वे भी सद्गुणीं एवं प्रतिभावान् सन्तान प्राप्त करने के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ कराते थे। गर्भाधान, सीमान्त, पुंसवन, जातक–र्म, नामकरण आदि संस्कार बालक के जन्म लेते–लेते अबोध अवस्था में ही हो जाते थे। [13] इनमें से प्रत्येक में हवन होता था, ताकि बालक के मन पर दिव्य प्रभाव पड़ें और वह बड़ा होने पर पुरुष सिंह एवं महापुरुष बनें। प्राचीनकाल का इतिहास साक्षी है कि जिन दिनों इस देश में अश्वमेध यज्ञ की प्रतिष्ठा थी, उन दिनों यहाँ महापुरुषों की कमी नहीं थी। आज यज्ञ का तिरस्कार करके अनेक दुर्गुणों, रोगों, कुसंस्कारों और बुरी आदतों से ग्रसित बालकों से ही हमारे घर भरे हुए हैं । इस तरह अश्वमेध यज्ञ पीढ़ियों को संस्कारित करने के अभिनव प्रयोग थे, जो पारिवारिक स्तर पर विभिन्न संस्कारों के माध्यम से सम्पन्न होते थे।

समाज निर्माण एवं वातावरण का सूक्ष्म परिष्कार

आचार्यश्री के शब्दों में, अश्वमेध यज्ञ जैसे विराट आयोजनों से अदृश्य आकाश में जो आध्यात्मिक विद्युत तरंगें फैलती हैं, वे लोगों के मनों में द्वेष, पाप, अनीति, वासना, स्वार्थपरता, कु–टिलता आदि बुराईयों को हटाती हैं। [12] फलस्वरुप, उससे अनेकों सामाजिक समस्याएं हल होती हैं। अनेकों उलझनें, गुत्थियाँ, पेचीदगियाँ, चिन्ताएं, भय, आशंकाएं तथा बुरी सं–भावनाएं समूल नष्ट हो जाती हैं। राजा, धनी, सम्पन्न लोग, ऋषि–मुनि बडे–बड़े यज्ञ करते थे, जिससे दूर–दूर तक का वातावरण शुद्ध होता था और देश–व्यापी, विश्व–व्यापी बुराइ–याँ तथा उलझनें सुलझतीं थीं। इस तरह व्यष्टि से लेकर समष्टि

तक के हित में अश्वमेध यज्ञ अपनी महती भूमिका निभाता है।

उपसंहार

इस प्रकार अश्वमेध यज्ञ महान यज्ञों की श्रेणी में आता है। यह एक आध्यात्मिक अनुष्ठान के रूप में वैदिक काल से सम्पन्न होता आ रहा है। वर्तमान समय में 'आचार्य' जी द्वारा इस परं–परा की महत्ता को अक्षुण्ण रखते हुए इसे विचार परिवर्तन के एक सशक्त माध्यम के रूप में विवेचित किया गया है। विशाल आयोजनों में विश्व के विविध स्थानों से पधारे हुए याजकों एवं स्वयंसेवकों को आध्यात्मिक जीवन चर्या, व्यक्तित्व विकास, पारिवारिक संस्कार, समाज एवं राष्ट्र निर्माण एवं वातावरण का सूक्ष्म परिष्कार के विशिष्ट सिद्धांतों से अवगत कराया जाता है। इन आयोजनों में विभिन्न विधाओं और कार्यक्रमों को सम्पन्न किया जाता है जिसमे विचार मंच, यज्ञ शालाएं, साहित्य केंद्र एवं प्रदशनी जैसी इकाइयों के माध्यम से जनसंचार होता है। इन्ही विशेषताओं के कारण अश्वमेध यज्ञ जनसंचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

Compliance with ethical standards Not required.
Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

सन्दर्भ

[1] Kumar KJ. Mass communication in India. Mumbai: Jaico Publishing House; 2010.

[2] Motlani J. The size and shape of Yagya Kund: Mathematical and spiritual aspects. Interdisciplinary Journal of Yagya Research. 2020;3(1):8–14. doi.org

[3] Sharma S. Karmakand Bhaskar. Mathura: Yug Nirman Yojna Vistaar Trust, Gayatri Tapobhumi; 2022. p. 24–25

[4] Sharma BD. Akhand Jyoti: Ashwamedh Arthaat – Ajay Rashtra Ka Samarth Sampadan. Akhand Jyoti. 1992 Sep;2:39. Available from: https://www.awgp.org

[5] Geetapress. Mahabharat Shanti Parva, Section 34, Shloka 26. Mahabharat, Vol. 6. Gorakhpur: Geetapress; 1991. Available from: https://sanskritdocuments.org

[6] Geetapress. Shrimad Valmiki Ramayan, Baalkand, Sarg 14. Gorakhpur: Geetapress; 2020.

[7] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा. सम्राट समुद्रगुप्त. अखण्ड ज्योति. 1966;1:1. hindi.awgp.org

[8] आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा. तप द्वारा प्राणशक्ति के अभिवर्धन. अखण्ड ज्योति. 1976;4(version 2):9. available from: hindi.awgp.org

[9] All World Gayatri Pariwar. List of Ashwamedha Yagya. Available from: hindi.awgp.org

[10] Agarwal P, Parashar A. Development of holistic religious tourism through ancient Indian technique of Yagya: Exploration with Ashwamedha Yagya. Interdisciplinary Journal of Yagya Research. 2022;4(2):7–16. doi.org

[11] Pandya P. Reviving the Vedic Culture of Yagya. Mathura: Yug Nirman Yojana Press; 2004.

[12] Yagya, Mahayagya, Ashwamedha yagya. Akhandjyoti. November 1992:version 2 avaible from: hindi.awgp.org

[13] Pandya P. Apekshit sanskar janm ke purva se hi deye jaay. Akhand Jyoti. 1996;November(version 2):36. Available from: hindi.awgp.org